

अध्याय 5

ड्रिलिंग प्रचालन में दक्षता और मितव्ययिता

ओआईएल के ड्रिलिंग प्रचालनों की दक्षता का अवधारण और उसने अपने ड्रिलिंग ठेका प्रबन्धन में कितनी मितव्ययित प्राप्त की है की समीक्षा करने के लिए लेखापरीक्षा ने ड्रिलिंग मीटरेज, ड्रिलिंग गति, गैर उत्पादक समय (एनपीटी), रिगो का पुराना होना इत्यादि के साथ साथ वर्कओवर रिगो के निष्पादन सहित विकास ड्रिलिंग की तुलना में अन्वेषण ड्रिलिंग देखते समय उसकी स्वयं की और भाड़े पर ली गई रिगो की परिचालन क्षमता की समीक्षा की। लेखापरीक्षा ने स्वयं के रिगो के साथ साथ भाड़े पर लिए गए चार्टर रिगो के अधिग्रहण और नवीनीकरण के लिए ठेको के प्रबन्ध को भी देखा।

5.1 ड्रिलिंग की परिचालन दक्षता

ड्रिलिंग प्रचालन की सफलता मुख्य रूप से रिगो की दक्षता पर निर्भर करती है। ओआईएल अपने ड्रिलिंग परिचालनों के लिए स्वयं के साथ साथ भाड़े पर लिए गए रिगों का उपयोग करता है।

5.1.1 स्वयं और भाड़े पर लिए गए रिगों की परिचालन दक्षता

स्वयं और भाड़े पर लिए गए रिगो के माध्यम से ड्रिलिंग प्रचालनों के निष्पादन की चर्चा अनुवर्ती पेराग्राफों में की गई है।

5.1.1.1 विकास ड्रिलिंग की तुलना में अन्वेषण ड्रिलिंग

ओआईएल हाइड्रोकार्बन अन्वेषण के लिए अन्वेषण और विकास ड्रिलिंग करता है। ओआईएल का लक्ष्य और 2009-10 से 2013-14 तक पांच वर्षों के लिए अन्वेषण ड्रिलिंग और विकास ड्रिलिंग की वास्तविकता क्रमशः तालिका 5.1 और 5.2 में विस्तृत रूप से दी गई है:

तालिका 5.1 – अन्वेषण ड्रिलिंग का लक्ष्य और वास्तविक

वर्ष	बी.ई. लक्ष्य		आर.ई. लक्ष्य		वास्तविक आकड़े		बी ई लक्ष्य का आधिक्य (कमी)		आर ई लक्ष्य का आधिक्य (कमी)	
	मीटरज	कुएं	मीटरज	कुएं	मीटरज	कुएं	मीटरज	कुएं	मीटरज	कुएं
2009-10	71920	22	72957	20	58375	16	(13545)	(6)	(14582)	(4)
2010-11	103050	31	63650	20	45875	13	(57175)	(18)	(17775)	(7)
2011-12	101900	33	91642	24	56568	16	(45332)	(17)	(35074)	(8)
2012-13	114040	33	77044	25	66435	19	(47605)	(14)	(10609)	(6)
2013-14	100750	31	52404	17	35699	9	(65051)	(22)	(16705)	(8)
जोड़	491660	150	357697	106	262952	73	(228708)	(77)	(94745)	(33)

स्रोत : रिगो का टूर रजिस्टर

तालिका 5.2 – विकास ड्रिलिंग का लक्ष्य और वास्तविकता

वर्ष	बी.ई. लक्ष्य		आर.ई. लक्ष्य		वास्तविक आकड़े		बी ई लक्ष्य में आधिक्य (कमी)		आर ई लक्ष्य में आधिक्य (कमी)	
	मीटरज	कुएं	मीटरज	कुएं	मीटरज	कुएं	मीटरज	कुएं	मीटरज	कुएं
2009-10	121680	44	109350	39	84076	30	(37604)	(14)	(25274)	(9)
2010-11	117000	46	70700	26	71253	24	(45747)	(22)	553	(2)
2011-12	92600	34	67529	28	71426	22	(21174)	(12)	3897	(6)
2012-13	91375	27	69051	29	62478	19	(28897)	(8)	(6573)	(10)
2013-14	105110	38	94042	33	69412	25	(35698)	(13)	(24630)	(8)
जोड़	527765	189	410672	155	358645	120	(169120)	(69)	(52027)	(35)

स्रोत: रिगो का टूर रजिस्टर

लेखापरीक्षा ने देखा कि:

अन्वेषण ड्रिलिंग में 2009-10 से 2013-14 की अवधि के दौरान अन्वेषण कुओं की ड्रिलिंग में महत्वपूर्ण गिरावट आई थी। मीटरज के अनुसार, 2010-11 से 2013-14 के दौरान अन्वेषण ड्रिलिंग के आरई लक्ष्य बीई लक्ष्यों से 10 और 48 प्रतिशत के बीच कम हो गए थे। अन्वेषण ड्रिलिंग के लिए बीई लक्ष्यो की कमी के बाद भी, सभी वर्षों में मीटरज प्राप्ति में 14 और 38 प्रतिशत के बीच कमी आई थी। कुओं में 2009-10 से 2013-14 के दौरान अन्वेषण ड्रिलिंग के आरई लक्ष्य बीई लक्ष्यों से 9 और 45 प्रतिशत के बीच कम हुए थे। अन्वेषण ड्रिलिंग के लिए बीई लक्ष्यों में कमी के बाद भी सभी वर्षों में कई कुओं में प्राप्ति में 20 और 47 प्रतिशत के बीच कमी आई थी।

विकास ड्रिलिंग में 2009-10 से 2013-14 की अवधि के दौरान विकास कुओं की ड्रिलिंग में महत्वपूर्ण संचयी गिरावट हुई थी। यद्यपि ओआईएल ने 2010-11 और 2011-12 के दौरान मीटरेज के अनुसार विकास ड्रिलिंग के लिए अपने आरई लक्ष्य प्राप्त कर लिए थे, फिर भी उपरोक्त अवधि में 8 कुओं की कमी थी। मीटरेज के संबंध में ओआईएल ने 2009-10 से 2013-14 के दौरान बिना किसी अभिलेखित कारण के विकास ड्रिलिंग के लिए अपने आर ई लक्ष्य बी ई लक्ष्य से 11 और 40 प्रतिशत के बीच कम कर दिए थे। बीई लक्ष्यों की कमी के बाद भी, वास्तविक ड्रिलिंग में 2009-10, 2012-13 और 2013-14 में 10 और 26 प्रतिशत के बीच कमी आई थी। कुओं के संबंध में ओआईएल ने 2012-13 को छोड़कर 2009-10 से 2013-14 के दौरान विकास ड्रिलिंग के लिए अपने बीई लक्ष्यों को 11 प्रतिशत और 43 प्रतिशत के बीच कम कर दिया था। आरई लक्ष्यों में कमी के बाद भी, सभी वर्षों में गिरावट 8 और 34 प्रतिशत के बीच थी।

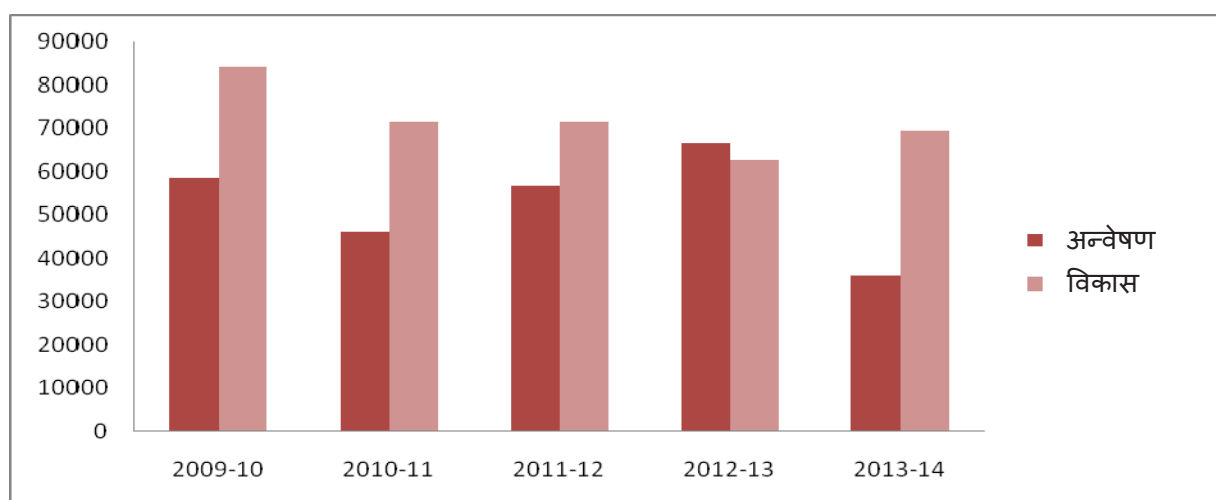
यद्यपि ओआईएल कई वर्षों से अन्वेषण ड्रिलिंग के लिए अपने लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सका फिर भी वह एक भाड़े के चार्टर रिग के लिए ठेका निष्पादित करने में विफल रहा जो दिसम्बर 2012 में समाप्त हो गया था।

लेखापरीक्षा ने 2009-10 से 2013-14 की अवधि के दौरान मीटरेज तथा कुओं के संबंध में ड्रिल किए गए विकास कुओं की तुलना में अन्वेषण कुओं की विवरणों की भी तुलना की। लेखापरीक्षा विश्लेषण के परिणाम तालिका 5.3 तथा चित्र 5.1 तथा 5.2 में दिए गए हैं:

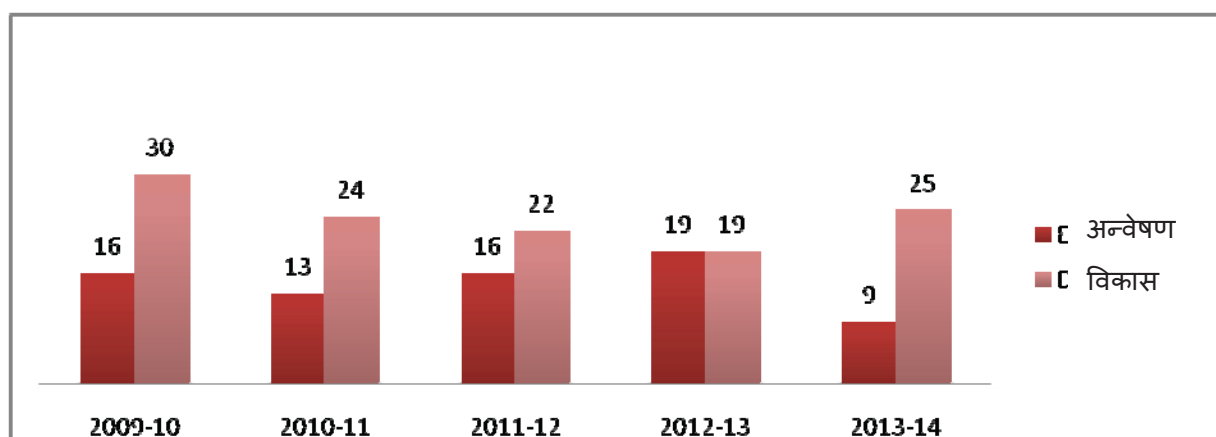
तालिका 5.3 – अन्वेषण ड्रिलिंग एवं विकास ड्रिलिंग की प्रतिशतता

वर्ष	अन्वेषण ड्रिलिंग		विकास ड्रिलिंग		कुल मीटरज	कुल कुँए	कुल ड्रिलिंग पर अन्वेषण ड्रिलिंग की प्रतिशतता	कुल कुँओं पर अन्वेषण कुँओं की प्रतिशतता	कुल ड्रिलिंग पर विकास ड्रिलिंग की प्रतिशतता	कुल कुँओं पर विकास कुँओं की प्रतिशतता
	मीटरज	कुँए	मीटरज	कुँए						
(I)	(II)	(III)	(IV)	(V)	(VI = II+IV)	(VII = III+V)	(VIII)	(IX)	(X)	(XI)
2009-10	58375	16	84076	30	142451	46	41	35	59	65
2010-11	45875	13	71253	24	117128	37	39	35	61	65
2011-12	56568	16	71426	22	127994	38	44	42	56	58
2012-13	66435	19	62478	19	128913	38	52	50	48	50
2013-14	35699	9	69412	25	105111	34	34	26	66	74
जोड़	262952	73	358645	120	621597	193	42	38	58	62

चित्र 5.1 – अन्वेषण ड्रिलिंग और विकास ड्रिलिंग (मीटरज में)



चित्र 5.2 – अन्वेषण ड्रिलिंग और विकास ड्रिलिंग (कुओं की संख्या में)



यह देखा गया था कि

- 2012-13 को छोड़कर, जब अनुपात लगभग 50:50, का था, अन्य वर्षों में, 2009-10 से 2013-14 की अवधि के दौरान विकास ड्रिलिंग गतिविधियों को अन्वेषण ड्रिलिंग से अधिक प्राथमिकता दी गई थी।
- ओआईएल विकास ड्रिलिंग पर अधिक (48 से 66 प्रतिशत तक) तथा अन्वेषण ड्रिलिंग पर कम (34 से 52 प्रतिशत तक) निर्भर था जिसके परिणामस्वरूप विकास ड्रिलिंग की तुलना में अन्वेषण ड्रिलिंग में गिरावट आई।
- विकास हेतु अधिक प्रमाणित क्षेत्र जोड़ने के लिए तथा बेहतर रिजर्व प्रतिस्थापन अनुपात रखने के लिए, अन्वेषण ड्रिलिंग के माध्यम से अधिक से अधिक नये क्षेत्रों की खोज किये जाने की आवश्यकता थी। अन्वेषण प्रयासों को कम प्राथमिकता देने से हाइड्रोकार्बन के नये क्षेत्रों को जोड़ने का समग्र उद्देश्य कमजोर हो गया जैसा कि हाइड्रोकार्बन विजन 2025 में अभिकल्पना की गई थी।

ओआईएल ने बताया (अप्रैल 2015) कि 12 वीं पंच वर्षीय योजना के लक्ष्यों के साथ ड्रिलिंग योजनाओं की भिन्नता मुख्यतः भूमि के अधिग्रहण, वन मंजूरी, रक्षा मंजूरी, मुकद्दमेंबाजी, लम्बी उत्पादन जाँच, कठिन डाऊनहोल समस्याएँ इत्यादि के लिए लम्बी समय-सीमा के कारण थी। जिसकी वजह से क्षेत्रीय समस्याएँ हुईं और रिग वर्षों की हानि हुई। ओआईएल ने आगे बताया कि ड्रिलिंग रिग को चार्टर भाड़े पर लेने के लिए प्रतिस्थापन संविदा प्रदान की गई थी परन्तु ठेकेदार रिग को जुटाने में विफल हुआ जो बाद में रद्द हो गया था।

विकास ड्रिलिंग पर अधिक तथा अन्वेषण ड्रिलिंग पर कम भरोसे के संबंध में लेखापरीक्षा तर्क को स्वीकार करते समय, ओआईएल ने बताया (अप्रैल 2015) कि 2010-11 से 2013-14 तक अन्वेषण ड्रिलिंग प्रयास थोड़े कम थे, जो उत्पादन लक्ष्य पूरा करने की ओआईएल की वचनबद्धता तथा कई संभावित अन्वेषण क्षेत्रों के आरक्षित वनों/वन्य जीवन अभयारण्यों के अन्तर्गत आने के कारण भी थे।

ओआईएल का उत्तर (अप्रैल 2015) सतोषजनक नहीं है क्योंकि दर्शाये गए कारकों में से कोई भी ओआईएल के लिए नया नहीं था तथा इस तथ्य के मद्देनजर कि उपरोक्त सभी बाधाओं पर विचार करते हुए ओआईएल द्वारा लक्ष्य निर्धारित किये गए थे, आने वाली कमियों को दूर करने के लिए इनका समाधान किया जाना चाहिए था। भाड़े पर लिए गए चार्टर रिग के नियोजन के संबंध में, तथ्य यह रह जाता है कि अन्वेषण गतिविधियों के लिए जनवरी 2013 से भाड़े पर लिया गया कोई चार्टर रिग प्रतिस्थापन के रूप में उपलब्ध नहीं था। ओआईएल ने अपने आरई लक्ष्यों में बीई लक्ष्यों के प्रति प्रबल रूप से कमी की थी तथा ऐसी

कमी के पश्चात भी उपलब्धि में महत्वपूर्ण गिरावट आई थी। यद्यपि, ओआईएल ने बीओडी तथा एमओपीएनजी को नियमित रूप से अपने विकास तथा अन्वेषण ड्रिलिंग के निष्पादन की सूचना दी थी, फिर भी ऐसी कमियों के कारण तथा आरई लक्ष्यों के अधोमुखी संशोधन के कारण का कोई विशिष्ट विश्लेषण अभिलेख पर उपलब्ध नहीं था।

उत्पादन लक्ष्य पूरा करने की इसकी वचनबद्धता तथा परिणामस्वरूप अन्वेषण ड्रिलिंग पर कम बल देने का ओआईएल का तर्क संतोषजनक नहीं है। इस तथ्य पर विचार करते हुए कि ई एवं पी क्षेत्र में एक एनओसी होने के नाते ओआईएल अपनी कार्यप्रणाली के सभी पहलुओं पर विचार करके अन्वेषण ड्रिलिंग लक्ष्य निर्धारित करता है।

पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस पर स्थाई समिति (2013-14, 15 वीं लोक सभा) ने अपनी 21वीं रिपोर्ट में टिप्पणी की कि एनओसीज के ड्रिलिंग लक्ष्यों की कम प्राप्ति मुख्यतः भौगोलिक स्थितियों के कारण सामने आई कठिनाईयों/एमओडी तथा एमओईएफ, डी आर डी ओ इत्यादि से अपेक्षित अनुमतियों तथा मंजूरीयों के न मिलने के कारण थी। समिति ने सिफारिश की कि एमओपीएनजी/ओआईएल को अन्वेषण लक्ष्यों की समय पर प्राप्ति के लिए जल्द कार्यवाही करने के लिए संबंधित प्राधिकारियों से अनुमतियाँ/मंजूरीयाँ प्राप्त करने के मामले को सख्ती के साथ जारी रखना चाहिए। हाबड्रोकार्बन विजन 2025 में भी व्यापक अन्वेषण हेतु आक्रामक प्रोत्साहन तथा अन्वेषण प्रयासों के तीव्रीकरण के माध्यम से तेल सुरक्षा पर ध्यान केन्द्रित करने एवं तेल एवं गैस की घरेलू उपलब्धता बढ़ाने के लिए एक समयबद्ध ढंग से अनन्वेषित बेसिनों की 100 प्रतिशत कवरेज की प्राप्ति पर जोर दिया गया। समिति ने यह सिफारिश भी की कि ड्रिलिंग लक्ष्यों में कमी को ध्यान में रखते हुए, एमओपीएनजी को यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक कदम उठाने चाहिए कि एनओसीज उन्हें दिए गए अन्वेषण लक्ष्यों का पालन करें। इसी समिति ने 2012-13 में बताया कि अधिक घरेलू हाइड्रोकार्बन संसाधनों का पता लगानेकी आवश्यकता के मद्देनजर अन्वेषण एवं विकास ड्रिलिंग लक्ष्यों में गिरावट कार्यक्रम को गंभीरता से प्रभावित करेगी।

एक्जिट कान्फ्रेंस में (जुलाई 2015) एमओपीएनजी/ओआईएल ने लेखापरीक्षा के विचारों को स्वीकार किया।

5.1.1.2 ड्रिलिंग की गहराई एवं ड्रिलिंग के समय में निष्पादन

ओआईएल वार्षिक एवं त्रिवार्षिक प्रायोगिक ड्रिलिंग कार्यक्रम तैयार करता है, जिसमें यह ड्रिल किए जाने वाले कुँओं की संख्या, इनकी गहराई तथा प्रत्येक कुँए के लिए अपेक्षित नियोजित दिनों की संख्या की योजना बनाता है। 2013-14 को समाप्त होने वाले पिछले पाँच वर्षों के

दौरान ड्रिल किए गए कुल 193 कुँओं में से 142 कुँओं के अभिलेखों की नमूना जाँच से पता चला कि:

- 31 कुँओं में नियोजित गहराई तथा वास्तविक गहराई में अन्तर के कारण ओआईएल ने योजना से 1714 मीटर कम ड्रिल की थी। तथापि, इन कुँओं के लिए इसने कुल 2084 अतिरिक्त दिन लिए थे। कुँओं की ड्रिलिंग के लिए विलम्ब 6 से 277 दिनों के बीच था;
- 6 कुँओं में, लिया गया वास्तविक ड्रिलिंग समय नियोजित दिनों से कहीं अधिक था जबकि वास्तविक एवं नियोजित गहराई बराबर थी। ओआईएल ने इन कुँओं के लिए कुल 637 दिन अधिक लिए थे। कुँओं की ड्रिलिंग के लिए विलम्ब 19 से 276 दिनों के बीच तक था।

लेखापरीक्षा तर्क को स्वीकार करते समय, ओआईएल ने बताया (अप्रैल 2015) कि लिए गए अतिरिक्त समय के लिए कारण मुख्यतः गहरे विकास कुँओं की ड्रिलिंग के दौरान डाउनहोल जटिलताओं, जे बेन्ड/समस्तरीय/एस बेन्ड कुँओं की ड्रिलिंग, स्थानीय समस्याओं तथा भूमि अधिग्रहण में कठिनाई थी।

ओआईएल का तर्क इस तथ्य के मद्देनजर संतोषजनक नहीं है कि दर्शाये गये कारण विशिष्ट मुद्दे के लिए उचित है। तथापि, लेखापरीक्षा ने अधिकतर कुँओं में लिए गए अतिरिक्त ड्रिलिंग समय की यथाक्रम कमी को दर्शाया है। इसी तरह ओआईएल दर्शाये गए मुद्दों से सुपरिचित है तथा विलम्बों को नियंत्रित करने के लिए उचित योजना की सहायता ली जानी चाहिए थी।

5.1.1.3 निजी तथा भाड़े पर लिए गए रिगो की चक्र गति तथा वाणिज्यिक गति

ड्रिलिंग रिगो की दक्षता का निर्णय वाणिज्यिक गति³⁰ तथा चक्र गति³¹ के आधार पर किया जाता है। 2009-10 से 2013-14 की अवधि के लिए निजी रिगो तथा भाड़े पर

³⁰ वाणिज्यिक गति ड्रिलिंग चरण के दौरान संचालनों की दक्षता है तथा मीटरेज/रिग मास के अनुसार गिनी जाती है। इसमें उस तिथि से लेकर जब से रिग स्थान पर है तथा संचालन पुनः प्रारंभ करने के लिए तैयार है अन्तिम चरण तक जहाँ उत्पादन आवरण की जाँच की गई है कि तिथि शामिल है। इसमें केवल वास्तविक ड्रिलिंग समय शामिल है।

³¹ चक्र गति रिग परिनियोजन के समस्त चक्र के दौरान लिया गया समय है तथा रिग मास के अनुसार गिनी जाती है। इसमें रिग इसके पिछले स्थान से विमुक्त किये जाने से लेकर कुँए की ड्रिलिंग के पश्चात वर्तमान स्थान से विमुक्त करने तक का समय शामिल है। इसमें रिग प्रचालन समय, ड्रिलिंग समय, उत्पादन जाँच समय तथा पूर्णता/रूकावट समय शामिल है।

लिए गए रिगो की वाणिज्यिक गति एवं चक्र गति को तालिका 5.4 में तालिकाबद्ध किया गया है।

तालिका 5.4 – निजी एवं भाड़े पर लिए गए रिगो की वाणिज्यिक गति एवं चक्र गति

(मीटर प्रति माह)

ड्रिलिंग निष्पादन सूचक		2009-10	2010-11	2011-12	2012-13	2013-14
वाणिज्यिक गति	निजी रिग	1259.42	1405.95	1241.64	1886.21	1532.49
	भाड़े पर लिए गए रिग	1068.03	1293.48	1640.07	1885.74	976.70
चक्र गति	निजी रिग	834.61	487.44	573.40	1091.30	708.59
	भाड़े पर लिए गए रिग	650.13	696.22	856.50	1579.15	578.19

लेखापरीक्षा ने देखा कि:

- 2009-10 से 2013-14 की अवधि के दौरान निजी रिगो एवं भाड़े पर लिए गए रिगो की वाणिज्यिक गति तथा चक्र गति में असामान्य उतार-चढ़ाव थे, जबकि रिगो की संख्या समान रही थी।
- भाड़े पर लिए गए रिगो की वाणिज्यिक गति एवं चक्र गति 2012-13 की तुलना में वर्ष 2013-14 में क्रमशः 52 तथा 37 प्रतिशत तक घट गई थी। तथापि, ओआईएल ने भाड़े पर लिए गए रिगो की निष्फलता को नियंत्रित करने के लिए रिगो को चार्टर भाड़े पर लेने हेतु अनुबन्ध में कोई खण्ड शामिल नहीं किया था।
- ओआईएल ने इसके निजी रिगो के लिए वाणिज्यिक गति एवं चक्र गति हेतु प्रतिमान निर्धारित नहीं किये थे तथा इसे भाड़े पर लिए गए रिगो के लिए संविदा में भी शामिल नहीं किया था। लेखापरीक्षा तर्क को स्वीकार करते समय, ओआईएल ने बताया (अप्रैल 2015) कि वाणिज्यिक गति तथा चक्र गति प्रत्येक रिग के लिए तथा प्रत्येक विशिष्ट ड्रिलिंग स्थान के लिए समान नहीं होगी तथा यह उप-सतह समस्या, विभिन्न उप-सतह भूविज्ञान, लक्षित गहराई, उपस्कर के साथ साथ प्रचालनों की दक्षता, अंश चयन तथा स्थानीय पर्यावरणीय समस्या के कारण निजी रिगो तथा चार्टर भाड़े पर लिए रिगो दोनों के लिए अलग अलग स्थान पर अलग अलग होगी। उपरोक्त के मद्देनजर सामान्य नियम के रूप में वाणिज्यिक एवं चक्र गति की तुलना करना अनुचित था। इसके अतिरिक्त, ओआईएल की नियोजित वाणिज्यिक गति तथा चक्र गति के लिए प्रतिमान वार्षिक प्रायोगिक ड्रिलिंग कार्यक्रम (टीडीपी) द्वारा निर्देशित होती है। प्रत्येक रिग के प्रति वार्षिक टीडीपी में प्रत्येक कुँए के

लिए रिग गतिविधि तथा प्रारंभ³² करने की तिथि से पूर्णता तिथि हेतु अपेक्षित समय चिन्हित किया जाता है जिसका उपयोग नियोजित वाणिज्यिक गति तथा चक्र गति की गणना के आधार के रूप में किया गया था। यह समय सीमा आन्तरिक एवं चार्टर भाड़े पर लिए गए रिग दोनो पर लागू थी। चार्टर भाड़े पर लिए गए रिगो की दक्षता के लिए शास्ति शून्य दर पर लगाई जा रही थी जहाँ संविदा के खण्डों के अनुसार लागू थी।

ओआईएल का तर्क इस तथ्य के मद्देनजर देखने की आवश्यकता है कि बेशक स्थिति स्थान स्थान पर भिन्न थी, उतार - चढाव एक यथोचित सीमा में होना चाहिए। लेखापरीक्षा ने असामान्य उतार - चढाव तथा गति की असमान/विषम प्रवृत्ति बताई थी जिसके लिए अभिलेख पर कोई उचित विश्लेषण नहीं था।

इसके अतिरिक्त, चार्टर भाड़े पर लिए गए रिग के संबंध में न्यूनतर वाणिज्यिक एवं चक्र गति के लिए शास्ति लगाने से संबंधित उत्तर स्वीकार्य नहीं है क्योंकि ओआईएल ने ठेकेदार को ठेकेदार की चूक के कारण निष्क्रिय पड़े रहे रिग के मामले में ही दण्डित किया था न कि न्यूनतर वाणिज्यिक अथवा चक्र गति के कारण।

5.1.1.4 रिगो का गैर उत्पादक समय

31 मार्च 2014 को ओआईएल के पास विभिन्न क्षमताओं के 9 आन्तरिक ड्रिलिंग रिग तथा 13 वर्कओवर रिग थे। अपने बेड़े के अतिरिक्त, ओआईएल ने ड्रिलिंग गतिविधियों के लिए 5 चार्टर भाड़े पर लिए गए ड्रिलिंग रिग तथा 4 चार्टर भाड़े पर लिए गए वर्कओवर रिग भी प्रयोग किये थे।

क) निजी एवं भाड़े पर लिए गए ड्रिलिंग रिग

रिगो के रसद एवं अन्य सेवा प्रदाताओं के बीच सक्रिय समन्वय के साथ गैर-उत्पादक समय (एनपीटी) को कम करके अधिक दक्षता प्राप्त की जा सकती है। 2009-10 से 2013-14 की अवधि के लिए निजी ड्रिलिंग रिगो तथा चार्टर भाड़े पर लिए गए ड्रिलिंग रिगो के संबंध में एनपीटी के वर्ष-वार ब्यौरे तालिका 5.5 में दिया गया है:

³² एक कुँए की ड्रिल प्रारंभ करने की प्रक्रिया

तालिका 5.5 – निजी तथा भाड़े पर लिए गए ड्रिलिंग रिगो का एनपीटी

(ऑकड़े घण्टों में)

वर्ष	निजी ड्रिलिंग रिग			चार्टर भाड़े पर लिए गए ड्रिलिंग रिग		
	कुल घण्टे	उत्पादक घण्टे	एनपीटी	कुल घण्टे	उत्पादक घण्टे	एनपीटी
2009-10	63528	43550	19978	35064	28408	6656
2010-11	61320	34144	27176	36528	26842	9686
2011-12	68664	41980	26684	43800	22468	21332
2012-13	64272	41956	22316	43104	27488	15616
2013-14	40344	24676	15668	25680	14072	11608

स्रोत : रिगो का दौरा रजिस्टर

लेखापरीक्षा ने देखा कि:

- निजी ड्रिलिंग रिगो के मामले में एनपीटी की प्रतिशतता 2009-10 में 31 प्रतिशत से 2013-14 में 39 प्रतिशत तक बढ़ गई थी।
- चार्टर भाड़े पर लिए गए ड्रिलिंग रिगो के मामले में, एनपीटी की प्रतिशतता 2009-10 में 19 प्रतिशत से 2013-14 में 45 प्रतिशत तक बढ़ गई थी।
- यद्यपि एनपीटी हेतु ओएनजीसी प्रतिमान 10 प्रतिशत से कम है तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिमान 5 प्रतिशत से कम है, फिर भी ओआईएल के निजी ड्रिलिंग रिगो का एनपीटी औसत 38 प्रतिशत था तथा चार्टर भाड़े पर लिए गए रिगो का 35 प्रतिशत था। ओआईएल द्वारा ड्रिलिंग रिगो के एनपीटी हेतु प्रतिमान अभी निर्धारित नहीं किया गया है।
- चार्टर भाड़े पर लिए गए तीन ड्रिलिंग रिगो के मामले में, समय पर उपस्कर एवं सामग्रियां उपलब्ध कराने में ओआईएल की विफलता के कारण ओआईएल को ठेकेदार को एवजी प्रभारों के प्रति ₹ 5.34 करोड़ का भुगतान करना पड़ा था।
- 2009-10 एवं 2013-14 की अवधि के दौरान असम एवं असम - अरकन में ड्रिल किए गए 142 कुँओं में से, 33 कुँओं में ड्रिलिंग रिगो को जुटाने में विलम्ब हुए थे जो वर्तमान स्थान पर रिग-डाउन के दिन से अगले स्थान पर रिग-अप तक परिकलित किए गए थे। ये विलम्ब 8 से 205 दिनों के बीच थे।
- उपरोक्त के अलावा, 2009-10 से 2013-14 की अवधि के दौरान, चार्टर भाड़े पर लिए गए 6 ड्रिलिंग रिग 108 माह की कुल अवधि तक उपलब्ध नहीं थे।

लेखापरीक्षा तर्क को स्वीकार करते हुए, ओआईएल ने बताया (अप्रैल 2015) कि एनपीटी की उच्च दर के कारण दर्शायी गई अवधि के लिए अन्वेषण ड्रिलिंग लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सका जो मुख्यतः स्थानीय समस्याओं, बन्द, घेराबन्दी तथा ठेकेदार की चार्टर भाड़े पर लिए गए रिग से संबंधित समस्या इत्यादि थी। ओआईएल ने आगे बताया (मई 2015) कि

एनपीटी की गणना के लिए डीजीएच प्रतिमान पर विचार करते हुए सतही तथा उप सतह समस्याओं तथा अन्यत्रवासिता के विषय के अतिरिक्त एनपीटी 2009-10 से 2013-14 के दौरान 5 से 13 प्रतिशत के मध्य था।

ओआईएल का तर्क संतोषजनक नहीं है क्योंकि ई एवं पी कारोबार में इसके प्रचालनों के दौरान लम्बी समयावधि में प्राप्त किये गए अनुभव से एनपीटी के विभिन्न कारणों का समाधान किया जाना चाहिए था। अवरोध तथा समस्याएँ भी ओआईएल के लिए नई नहीं थीं।

यह ध्यान दिया जाना महत्वपूर्ण है कि पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस पर स्थाई समिति (2014 - 15, सोलहवीं लोक सभा) ने अपनी चौथी रिपोर्ट में टिप्पणी की थी कि रिग अन्वेषण तथा उत्पादन गतिविधियों के लिए मुख्य उपस्कर थे। समिति ने यह भी नोट किया कि कुछ परिहार्य तथा प्रबन्धनीय बाधों जैसे लॉजिस्टिक्स की प्रतीक्षा करते रिगो तथा तैयार स्थलों पर स्थापन पर प्रतीक्षा जिसने रिगो की उत्पादक अवधि को प्रभावित किया, के कारण चार्टर भाड़े पर लिए गए रिगो का निष्क्रिय समय एनओसी हेतु काफी उच्च था। समिति ने सिफारिश की कि एनओसीज को अन्वेषण कार्यक्रमों के प्रभावी नियोजन एवं प्रबन्धन पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए ताकि रिगो का इष्टतम उपयोग सुनिश्चित किया जा सके। समिति ने यह इच्छा भी जताई कि एनओसीज को अन्तर्राष्ट्रीय बेन्चमार्क के अनुरूप रिगो के उत्पादकता स्तर को प्राप्त करने के लिए प्रयास करना चाहिए।

एक्जिट कान्फ्रेंस (जुलाई 2015) में एमओपीएनजी/ओआईएल ने बताया कि लेखा परीक्षा आपत्ति तथ्यों पर आधारित थी।

ख) वर्क ओवर रिग

वर्कओवर गतिविधियों में उत्पादन बढ़ाने के लिए उत्पादन कर रहे कुँए पर एक अथवा अधिक उपचारात्मक प्रचालन शामिल है। यह आक्रामक तकनीको जैसे वायरलाईन, कोईल्ड ट्यूबिंग अथवा स्नूबिंग वाले तेल कुँए मध्यवर्तन के किसी प्रकार से भी संदर्भित है। वर्कओवर गतिविधियाँ करने के लिए, ओआईएल ने वर्ष 2011-12 को छोड़कर जहाँ केवल 2 चार्टर भाड़े पर लिए गए रिग परिनियोजित किये गए थे, 2009-10 से 2013-14 की अवधि के दौरान 13³³ आन्तरिक वर्क ओवर रिग तथा 4 चार्टर भाड़े पर लिए गए रिग लगाए थे। 2009-10 से 2013-14 की अवधि के लिए निजी वर्कओवर रिगो तथा चार्टर भाड़े पर लिए गए वर्कओवर रिगो के एनपीटी के वर्ष वार ब्यौरे 5.6 में दिए गए हैं :

³³ वर्ष 2011-12 में प्रशिक्षण उद्देश्य से चिन्हित किए गए एक वर्कओवर रिग सहित

तालिका 5.6 – निजी तथा चार्टर भाड़े पर लिए गए वर्कओवर रिगो का एनपीटी

(आँकड़े घण्टों में)

वर्ष	निजी वर्कओवर रिग				चार्टर भाड़े पर लिए गए वर्कओवर रिग			
	कुल घण्टे	उत्पादक समय	एनपीटी	कुल घण्टों के प्रति एनपीटी की प्रतिशतता	कुल घण्टे	उत्पादक समय	एनपीटी	कुल घण्टों के प्रति एनपीटी की प्रतिशतता
2009-10	32776	29632	3144	10	25920	24524	1397	5
2010-11	50512	45906	4606	9	28632	25588	3044	11
2011-12	49600	46325	3275	7	17288	15264	2024	12
2012-13	51936	44935	7001	13	28968	25287	3681	13
2013-14	50528	44371	6158	12	35928	29436	6493	18

लेखापरीक्षा ने देखा कि:

- 2009-10 से 2013-14 की अवधि के दौरान निजी वर्कओवर रिगो का एनपीटी 7 से 13 प्रतिशत के मध्य तथा चार्टर भाड़े पर लिए गए वर्कओवर रिगो का 5 से 18 प्रतिशत के मध्य था।
- 2009-10 से 2013-14 तक निजी तथा चार्टर भाड़े पर लिए गए वर्कओवर रिगो के लिए एनपीटी ने एक बढ़ती हुई प्रवृत्ति दर्ज की।
- चार्टर भाड़े पर लिए गए वर्कओवर रिगो के एनपीटी की प्रतिशतता अपने वर्कओवर रिगो से काफी उच्चतर थी।

इस संबंध में, यह दर्शाना उपयुक्त है कि अभी तक ओआईएल द्वारा वर्कओवर रिगो के संबंध में एनपीटी हेतु प्रतिमान निर्धारित नहीं किए गए हैं।

लेखापरीक्षा के तर्क को स्वीकार करते समय ओआईएल ने बताया (अप्रैल 2015) कि इसके पास कुल 12 अपने वर्कओवर रिग थे जिनमें से सात रिग लगभग 30 वर्ष पुराने थे जहाँ एनपीटी रखरखाव के कारण अधिक था तथा इसलिए एनपीटी प्रवृत्ति को बढ़ा रहा था। चार्टर भाड़े पर लिए गए वर्कओवर रिगो के संबंध में एनपीटी मुख्यतः रिग प्रंचालकों द्वारा परिचालन क्षेत्रों में सामने आई बाहरी समस्याओं के कारण था।

तथ्य यह रहता है कि ओआईएल ने पुराने वर्कओवर रिगो को बदलने के लिए समय पर अपनी खरीद योजना को अन्तिम रूप नहीं दिया था। चार्टर भाड़े पर लिए गए वर्कओवर रिगों के संबंध में समय पर उपचारात्मक कार्रवाई करने के लिए ओआईएल को बढ़ते एनपीटी के लिए कारण का पता था।

एक्जिट कान्फ्रेंस (जुलाई 2015) में एमओपीएनजी/ओआईएल ने बताया कि लेखापरीक्षा आपत्ति तथ्यों पर आधारित थी।

5.1.1.5 कुँओं की उत्पादन जाँच

जलाशय की विशिष्ट स्थितियों तथा प्रवाह दबाव पर तेल कुँओं की प्रवाह क्षमता सुनिश्चित करने के लिए इनमें उत्पादन जाँच की जाती है। ओआईएल ने उत्पादन जाँच पूरी करने के लिए लक्ष्य दिवस निर्धारित किये हैं जो एक अन्वेषण कुँए के मामले में 15 दिन तथा विकास कुँए के लिए 10 दिन हैं।

पिछले पाँच वर्षों के दौरान ड्रिल किए गए 193 कुँओं में से महत्व के आधार पर चयनित 142 कुँओं (92 कुँए अपने रिगों से तथा 50 कुँए चार्टर भाड़े पर लिए गए रिगों से) के संबंध में उत्पादन जाँच हेतु लिए गए समय की नमूना जाँच की गई थी।

लेखापरीक्षा ने देखा कि:

- 59 कुँओं (30 कुँए अपने रिगों द्वारा तथा 29 कुँए चार्टर भाड़े पर लिए गए रिगों द्वारा) में ओआईएल योजना के अनुसार उत्पादन जाँच पूरी करने में विफल हुआ था। उत्पादन जाँच की पूर्णता में विलम्ब 6 से 94 दिनों के बीच तक था।
- 31 मार्च 2014 को कुँओं की प्रास्थिति रिपोर्ट के अनुसार, 8 कुँओं में एक महीने से चार महीने बीत जाने के बाद भी उत्पादन जाँच अधूरी रही थी।
- 2009-10 से 2013-14 की अवधि के दौरान उत्पादन जाँच के लिए कुल विलम्ब अपने रिगों के मामले में 1005 दिन था तथा चार्टर भाड़े पर लिए गए रिगों के मामले में 980 दिन था।
- उत्पादन जाँच में विलम्ब के कारण, ओआईएल ने 29 मामलों में स्टैण्डबाई प्रभागों के प्रति ठेकेदारों को चार्टर भाड़े पर लिए गए रिगों के प्रति ₹ 88.02 करोड़ का भुगतान किया।

उत्पादन जाँच में विलम्ब के परिणामस्वरूप रिगों का कम उपयोग तथा मीटरेज की हानि हुई जिसके परिणामस्वरूप एनपीटी में वृद्धि हुई।

ओआईएल ने उत्तर दिया (अप्रैल 2015) कि सामान्य तौर पर उत्पादन जाँच हेतु अपेक्षित समय विभिन्न कारकों जैसे जाँच हेतु चिन्हित क्षेत्रों की संख्या, डाऊनहोल चुनौतियों इत्यादि पर निर्भर था। ओआईएल ने उत्पादन जाँच में विलम्ब के लिए कुँए वार कारण प्रस्तुत किये हैं जिनमें एकल/बहु रेत में किये गए अतिरिक्त छिद्रों के अलावा ड्रिलिंग कर्मियों की अनुपलब्धता, सड़क टूटना, आईसोलेशन खराबी की मरम्मत, स्थानीय समस्या, खराब सीमेन्ट सक्वीजिंग कार्य, आन्तरिक मुद्दे, ट्यूबिंग फिश की वसूली, वाल्वों में निस्सरण इत्यादि शामिल हैं।

ओआईएल का उत्तर इस तथ्य के मद्देनजर देखने की आवश्यकता है कि उच्चतर उत्पादन जाँच समय के लिए ओआईएल द्वारा बताए गए अधिकतर कारकों पर उचित योजना के

द्वारा नियंत्रण पाया जा सकता था। इसके अतिरिक्त, ओआईएल द्वारा उत्पादन जाँच के दौरान सामने आने वाली सभी संभावित डाउन होल चुनौतियों पर उचित रूप से विचार करके ही अन्वेषण एवं विकास कुंओं के लिए उत्पादन जाँच हेतू प्रतिमान अपनाए गए थे।

5.1.1.6 अपने रिगों का पुराना होना

ओआईएल के पास ड्रिलिंग संचालन के माध्यम से हाइड्रोकार्बन रिजर्वों को अभिवर्धित करने के लिए एक समर्पित ड्रिलिंग विभाग है। ड्रिलिंग विभाग आन्तरिक रिगों के साथ साथ चार्टर भाड़े पर लिए गए रिगों का उपयोग करता है। 31.03.2014 को ड्रिलिंग विभाग के पास 9 आन्तरिक ड्रिलिंग रिगों तथा 5 चार्टर भाड़े पर लिए गए ड्रिलिंग रिगों का बेड़ा था।

नामांकित ब्लकों में अन्वेषण तथा विकास ड्रिलिंग हेतू रिगों की आवश्यकता का निर्धारण पंचवर्षीय योजना में ओआईएल की ड्रिलिंग प्रतिबद्धताओं तथा त्रिवर्षीय प्रायोगिक ड्रिलिंग कार्यक्रम के अनुसार परिनियोजन प्रतिमान के आधार पर किया जाता है। एनईएलपी ब्लको के मामले में, रिगों की आवश्यकता की गणना न्यूनतम कार्य कार्यक्रम (एनडब्ल्यूपी) के आधार पर ब्लॉक से संबंधित परियोजना द्वारा की गई है। कुंओं की प्रकृति एवं प्रकार के अनुरूप, रिगों के प्रकार/क्षमता का निर्धारण किया जाता है तथा अन्वेषण प्रयास हेतू अतिरिक्त रिगों की आवश्यकता की गणना आन्तरिक एवं वर्तमान में लगाए गए भाड़े के रिगों की उपलब्धता पर विचार करके की जाती है।

लेखापरीक्षा में यह देखा गया था कि 31 मार्च 2014 को आन्तरिक ड्रिलिंग रिगों का पुराना होना 9 से 36 वर्षों के बीच था। इसी प्रकार, विद्यमान 13 आन्तरिक वर्कओवर रिगों में से, 8 वर्कओवर रिगों का पुराना होना 25 से 35 वर्षों तक था तथा 5 वर्कओवर रिग जुलाई/दिसम्बर 2008 में शुरू किये गए थे।

एक ड्रिलिंग रिग का आदर्श जीवन काल 20 से 25 वर्ष के बीच होता है जो विभिन्न कारकों तथा उपयोग, अनुरक्षण इत्यादि पर निर्भर करता है। चूँकि ओआईएल बहुत पुराने उपकरणों के बेड़े से साथ संचालन कर रहा था। इसलिए इसने उच्च एनपीटी के कारण ओआईएल की अन्वेषण ड्रिलिंग को प्रभावित किया।

ओआईएल ने बताया (अप्रैल 2015) कि दो रिगों को छोड़कर इसके अपने रिगों का 2009 से नवीकरण किया गया था। पुराने वर्कओवर ड्रिलिंग रिगों को हटाने के लिए, 9 नये वर्कओवर ड्रिलिंग रिगों की खरीद प्रक्रिया प्रगति पर थी।

ओआईएल ने स्वयं स्वीकार किया कि इसके अपने कुल 12 वर्कओवर रिगों में से, 7 रिग लगभग 30 वर्ष पुराने हैं जहाँ अनुरक्षण के कारण एनपीटी अधिक था जो एनपीटी प्रवृत्ति में वृद्धि का कारण है।

एक्जिट कान्फ्रेंस में एमओपीएनजी/ओआईएल ने बताया (जुलाई 2015) कि काफी संख्या में नये रिग खरीद के अन्तर्गत थे तथा पुराने हो रहे रिगों को धीरे धीरे बदला जाएगा।

5.2 संविदाओं का प्रबन्धन

रिगों की खरीद

लेखापरीक्षा ने 2009-10 से 2013-14 के दौरान की गई रिग की सभी 4 खरीद संविदाओं की समीक्षा की। संविदाओं के प्रबन्धन में देखी गई कुछ कमियों को अनुबन्ध III में सूचीबद्ध किया गया है।

चार्टर भाड़े पर लिए गए रिग

रिगों को चार्टर भाड़े पर लेने के लिए निष्पादित की गई 20 संविदाओं में से, लेखापरीक्षा ने महत्व के आधार पर चयनित 8 संविदाओं की समीक्षा की। संविदाओं के प्रबन्धन में देखी गई कुछ कमियों को अनुबन्ध IV में सूचीबद्ध किया गया है।

5.2.1 चार्टर भाड़े के रिगों पर निर्भरता

ओआईएल द्वारा 2004 से अपने परिचालन क्षेत्र में चार्टर भाड़े पर लिए गए रिगों को लगाया था तथा उसके बाद इसके अपने ड्रिलिंग बेड़े की कमी को पूरा करने के लिए यह प्रक्रिया चलती रही। 2009-10 से 2013-14 की अवधि के दौरान, ओआईएल ने पाँच ड्रिलिंग रिग चार्टर भाड़े पर लेकर लगाए। इसी प्रकार, इसने इन सभी वर्षों में दो से चार चार्टर भाड़े पर लिए गए वर्कओवर रिग भी युक्त किये।

लेखापरीक्षा ने देखा कि ओआईएल ने भाड़े पर लिए गए रिगों पर अपनी निर्भरता को कम करने के लिए ड्रिलिंग रिग खरीदने हेतु कोई कार्यवाही प्रारंभ नहीं की थी क्योंकि पुराने ड्रिलिंग रिगों को बदलने के लिए ओआईएल ने 2005 में खरीद की थी। ओआईएल द्वारा की गई ड्रिलिंग रिगों की पिछली खरीद/प्रारंभ करने के लिए अप्रैल 2010 में ओआईएल की अनुवर्ती कार्यवाही को विधिक विवाद तथा रिग ले जाने वाले वाहन की दुर्घटना के कारण मूर्तरूप नहीं दिया गया। इस प्रकार ओआईएल भाड़े के रिगों को लगाने पर निर्भर था।

ओआईएल ने अपने उत्तर (अप्रैल 2015) में बताया कि इसने 2004 से निरन्तर रूप से अपने परिचालन क्षेत्रों में चार्टर भाड़े पर लिए गए रिग लगाए थे तथा उसके बाद ड्रिलिंग आवश्यकता को पूरा करने के लिए यह प्रक्रिया चलती रही जैसा त्रिवर्षीय ड्रिलिंग योजना में अभिकल्पित था। चार्टर भाड़े पर लिए गए रिगों पर निर्भरता को कम करने के लिए चार 2000 एचपी खुदाई रिगों की खरीद प्रक्रिया प्रगति पर थी। तथापि, आसान परिनियोजन के कारण, कुछ क्षेत्रों में चार्टर भाड़े पर लिए गए रिगों को अपने रिगों से अधिक प्राथमिकता दी गई थी।

इसके अतिरिक्त, यदि स्वयं के और रिग प्रयोग किये गये तो ड्रिलिंग के कार्य न करने के कारण रिग मालसूची बेकार हो सकती हो।

ओआईएल का उत्तर संतोषजनक नहीं है क्योंकि वहां ड्रिलिंग रिग्स की निरंतर आवश्यकता थी चूंकि पिछले कुछ वर्षों में अन्वेषण लक्ष्य को पूर्ण करने में विफल रहा। ओआईएल के ड्रिलिंग रिग का सफलतापूर्वक कार्य करने का समय 9 और 36 वर्षों के बीच का था और अधिक काम के लिये यह 5 और 35 वर्षों के बीच था। ओआईएल ने स्वीकार किया कि अधिक काम करने वाले रिग के सफलतापूर्वक कार्य करने के समय में रखरखाव के कारण अनुत्पादक समय में वृद्धि हुई। इसके अतिरिक्त, चार 2000 एचपी ड्रिलिंग रिग के लिये खरीद प्रक्रिया पूर्ण नहीं की गई थी (अप्रैल 2015)।

5.2.2 विशेष मुद्दे

(i) रिगों की खरीद

ओआईएल ने चार 600 एचपी मोबाइल कार्य/ड्रिलिंग रिग्स की आपूर्ति के लिये रिग विनिर्माताओं/आपूर्तिकर्ताओं से बोली आमंत्रित की (जनवरी 2006)। निविदा के उत्तर में, अलग-अलग विनिर्माताओं/आपूर्तिकर्ताओं³⁴ से चार बोलियां प्राप्त हुई थी।

तकनीकी संवीक्षा के दौरान (अप्रैल 2006), ओआईएल ने 25 मई 2006 के अंदर अन्य रूप से पात्र दो बोलीदाताओं अर्थात् मैसर्स चायना पेट्रोलियम तकनीकी विकास कॉरपोरेशन, चायना (सीपीटीडीसी) और मैसर्स एससी टीसी यूपीईटी एसआरएल, रोमानिया (एससीटीसी) से अतिरिक्त जानकारी मांगी।

सीपीटीडीसी प्रस्ताव और अनुवर्ती स्पष्टीकरण को ध्यान में रखते हुये, तकनीकी समिति ने निष्कर्ष निकाला (जुलाई 2006) कि सीपीटीडीसी के प्रस्ताव में गंभीर सीमाएं हैं। तथापि, जीएम (ओडी और आरएस) ने सुझाव दिया कि सीपीटीडीसी की बोली ड्रिलिंग विभाग द्वारा तकनीकी रूप से योग्य है और सीपीटीडीसी की सिद्ध स्रोत के रूप में सिफारिश की क्योंकि पूर्व में सीपीटीडीसी द्वारा आपूर्ति किया गया 1000 एचपी मोबाइल रिग राजस्थान में संतोषजनक रूप से कार्य कर रहा था। उन्होंने यह भी नोट किया कि मैसर्स एससीटीपी यूपीईटी एसआरएल, रोमानिया (एससीटीसी) द्वारा प्रस्तुत रिग भले ही तकनीकी रूप से स्वीकृत है का निष्पादन खराब था।

मांगे गये स्पष्टीकरण के उत्तर में सीपीटीडीसी ने कहा कि (सितम्बर 2006) 600 एचपी रिग की विशेषताएं 2005 में उनके द्वारा आपूर्ति किये गये 1000 एचपी रिग के जैसी थीं।

³⁴ 1. मैसर्स नेशनल ऑयल वेल वार्को, यूएसए,
2. मैसर्स चायना पेट्रोलियम तकनीकी विकास कॉरपोरेशन, चायना,
3. मैसर्स एससी टीसी यूपीईटी, एसआरएल, रोमानिया और
4. मैसर्स पीएमपी, यूके/यूक्रेन

सीपीडीसी ने अपेक्षित स्पष्टीकरण प्राप्त करने के लिये चायना में उत्पादक कार्य स्थल पर टीम भेजने के लिये अनुमोदन दिया और निर्देश दिया कि उन्हें क्षेत्र का दौरा करना चाहिये जहां ऐसी रिग्स चायना में प्रयोग की जा रही हैं। तदनुसार, टीम चायना गई और रिपोर्ट किया (अक्टूबर 2006) कि रिग का निष्पादन संतोषजनक था और पार्टी का प्रस्ताव तकनीकी रूप से स्वीकार्य था।

ओआईएल ने केवल सीपीडीसी का बोली मूल्य खोलने का निर्णय लिया (अक्टूबर 2006)। ओआईएल ने एससीटीसी की प्रस्तुति अस्वीकृत कर दी (नवम्बर 2006), और निष्कर्ष निकाला कि एससीटीसी द्वारा प्रस्तावित रिग मॉडल तकनीकी रूप से उचित नहीं था।

सीपीटीडीसी का बोली मूल्य जनवरी 2007 में खोला गया था और सीपीटीडीसी को ₹ 28.15 करोड़ के कुल मूल्य पर चार 600 एचपी स्वचालित मोबाइल वर्कओवर/ड्रिलिंग रिग की आपूर्ति के लिये क्रय आदेश दिया गया था जिसमें उनके भारतीय एजेंट (अर्थात मैसर्स कॉमेट एनर्जी सोल्यूशन इंडिया प्रा. लि., नई दिल्ली) को देय कमीशन के प्रति ₹ 0.07 करोड़ शामिल था।

इसके बाद, ओआईएल ने संशोधन आदेश जारी करके क्रय आदेश को संशोधित किया (अगस्त 2007) जिसमें रिग्स की विभिन्न विशिष्टताओं³⁵ में परिवर्तन शामिल था। ओआईएल ने ₹ 6.20 करोड़ के कुल मूल्य पर समान विशिष्टता वाली एक और रिग की आपूर्ति के लिये एक और संशोधन जारी किया (अगस्त 2007) जिसमें नई निविदा किये बिना भारतीय एजेंट को देय एजेंसी कमीशन के प्रति ₹ 0.02 करोड़ शामिल था। ठेकेदार ने जुलाई-दिसम्बर 2008 में रिग दी। ओआईएल ने देखा कि रिग विशिष्टता के अनुसार नहीं थे।

लेखापरीक्षा ने अवलोकन किया कि ओआईएल द्वारा अपनाई गई प्रक्रिया में कई मायनों में पारदर्शिता की कमी थी:-

- ओआईएल ने एससीटीसी के स्पष्टीकरण को अस्वीकृत करते हुये वेट के मुद्दे और अन्य मुद्दों पर सीपीटीडीसी की तकनीकी बोली स्वीकृत की।
- ओआईएल ने एससीटीसी जो विनिर्माता था से अधिक सीपीटीडीसी रिग के आपूर्तिकता को वरीयता दी। रिग के आपूर्तिकर्ता से रिग की खरीद से भविष्य में अतिरिक्त पुर्जों की बढ़ी हुई कीमत और गैर-उपलब्धता का जोखिम था।
- ओआईएल ने मैसर्स कॉमेट एनर्जी सोल्यूशन्स इंडिया प्रा. लि. को एजेंसी कमीशन के प्रति ₹ 0.09 करोड़ का भुगतान किया यद्यपि यह बोली में शामिल नहीं था।
- सीपीटीडीसी ने विशिष्टता को सुनिश्चित न करने वाले रिग की आपूर्ति की। बिड रिजेक्शन कमेटी के अनुसार बोलीदाताओं को बोली वैधता की अवधि के दौरान उनकी

³⁵ रोटरी गति, कंपाउंड गियर बॉक्स का वजन, उच्च गियर बॉक्स का वजन, इंजन मॉडल और ट्रांसमिशन मॉडल

बोली में उनके द्वारा एकबार प्रस्तावित रिग बनावट/मॉडल/विशिष्टता को बदलने की अनुमति नहीं थी। तथापि, ओआईएल ने उपरोक्त प्रावधानों का उल्लंघन किया।

ओआईएल ने कहा (अप्रैल 2015) कि उसने व्यापक रूप से आंतरिक ठेके के दिशानिर्देश और खरीद मैनुअल का पालन किया है और इस प्रकार अपनाई गई प्रक्रिया पारदर्शी थी। इसके अतिरिक्त, क्रय आदेश के प्रति अतिरिक्त आवश्यकता को जोड़ना मैनुअल के प्रावधानों के अनुसार अनुमत था और यह परिचालन तात्कालिकता के अनुसार किया गया था। ओआईएल के ठेके मैनुअल में रिग ठेके को अंतिम रूप देने के लिए समय सीमा निर्धारित नहीं है। ओआईएल ने एससीटीसी से अधिक सीपीटीडीसी के तकनीकी चयन को भी उचित बताया।

ओआईएल का उत्तर ठेके को अंतिम रूप देने के बाद सीपीटीडीसी द्वारा विशिष्टताओं में बाद में परिवर्तन पर मौन था। जैसा ऊपर स्पष्ट किया गया है ओआईएल के कार्य में पारदर्शिता की कमी थी और सीवीसी दिशानिर्देशों के विरुद्ध थे।

(ii) निविदा प्रक्रिया के बिना चार्टर्ड किराया रिग ठेका प्रदान करना

ओआईएल को दो चार्टर्ड किराया रिग की आवश्यकता थी और अतिरिक्त रिग के लिये प्रावधान सहित अप्रैल 2010 में निविदा जारी की। उसने ₹ 51.67 करोड़ के कुल ठेका मूल्य पर, एल1 बोलीदाता के रूप में सिमप्लेक्स ईफ्रास्ट्रक्चर, मुंबई (सिमप्लेक्स) को एक ड्रिलिंग रिग का ठेका दिया (मार्च 2012), और सिमप्लेक्स ने अपनी बोली में केवल एक रिग प्रस्तावित किया था। इसके बाद, ओआईएल ने एल1 के मूल्य पर समान निविदा के अंतर्गत जेबी एनर्जी प्रा.लि. (जेईपीएल) को दूसरी रिग के लिये ठेका³⁶ दिया (मई 2012)। जुलाई 2012 में, ओआईएल ने अक्टूबर 2012 तक तत्काल आधार पर तीसरी रिग लेने का निर्णय लिया।

नई निविदा जारी करने की बजाय, ओआईएल ने निविदा³⁷ में उपलब्ध अनुसार अतिरिक्त की आवश्यकता पूर्ण करने के लिये तीसरे रिग का विकल्प प्रयोग करने का निर्णय लिया जो मार्च 2012 में पूर्ण हुआ। ओआईएल ने दूसरी रिग (अर्थात ₹ 51.67 करोड़) की दर पर दो वर्ष की अवधि के लिये जेईपीएल को तीसरी रिग के लिये ठेका दिया (मार्च 2013)।

लेखापरीक्षा ने अवलोकन किया कि:

- ओआईएल ने जून 2010 और दिसम्बर 2011 में क्रमशः तकनीकी और मूल्य बोली खोली। तथापि, ओआईएल ने अप्रैल 2010 में जेईपीएल द्वारा प्रस्तावित दर पर लगभग तीन वर्ष समाप्त होने के बाद, मार्च 2013 में तीसरी रिग देने का

³⁶ संख्या सीओएनटी/जीएल/डीआरएलजी/288/12

³⁷ संख्या सीओएनटी/जीएल/डीआरएलजी/259/10

निर्णय लिया। लेखापरीक्षा ने जून 2012 में पूर्ण दूसरे ठेके³⁸ में देखा कि किराये पर लिये गये रिग की दर में गिरावट की प्रवृत्ति थी।

- लेखापरीक्षा की राय में, ओआईएल ने तीसरी रिग के लिये नई निविदा न करने से 2013 मौजूद कम और प्रतिस्पर्धी दर पाने से स्वयं को वंचित किया। ओआईएल के कार्य में पारदर्शिता की कमी थी क्योंकि ओआईएल ने निविदा नहीं खोली।
- तीसरी रिग लेने के लिये प्रस्ताव नई निविदा किये बिना जुलाई 2012 में फास्ट ट्रैक आधार पर किये गये चूँकि कथित रिग की अक्टूबर 2012 तक आवश्यकता थी और ठेका जेईपीएल को दिया गया था। लेखापरीक्षा ने देखा कि एलओए मार्च 2013 में जारी किया गया था। अंततः इससे तीसरी रिग की शीघ्र उपलब्धता के लिये निविदा प्रक्रिया को दरकिनार करने का उद्देश्य परास्त हुआ चूँकि सितम्बर 2013 तक भी उपलब्ध नहीं थी यद्यपि ठेकेदार ने रिग समय पर (अर्थात ठेका देने की तिथि से 180 दिनों के तैयार करने के समय) तैयार कर ली थी।
- ठेका मूल्य में ₹ 0.54 करोड़ का तैयार करने का प्रभार शामिल था। चूँकि जेईपीएल द्वारा प्रस्तावित ड्रिलिंग रिग दूसरे ठेके³⁹ के अंतर्गत दुलियाजन में ओआईएल का कार्य कर रही थी, ₹ 0.54 करोड़ का तैयार करने का प्रभार संविदात्मक मूल्य से अलग होना चाहिये जैसा रिग ठेकों⁴⁰ के प्रतिस्थापन के मामले में किया गया था।

ओआईएल ने उत्तर दिया (अप्रैल 2015) कि ठेका आवश्यकता की तात्कालिकता पर विचार करने के बाद और किराये पर तीसरे रिग के लिये नई निविदा जारी करने के लिये अपेक्षित समय से बचने के लिये दिया गया था। तीसरी रिग देने का निर्णय निविदा के प्रावधानों के अंदर था जो अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धी बोली आधार पर और कानूनी राय के आधार पर भी जारी किया गया था।

उत्तर संतोषजनक नहीं है क्योंकि ओआईएल द्वारा अपनाई गई प्रक्रिया में न केवल पारदर्शिता की कमी थी बल्कि वह जुलाई 2007 में जारी सीवीसी दिशानिर्देशों के विरुद्ध भी है। इसके अतिरिक्त, बीओडी का कोई भी अनुमोदन नहीं लिया था यद्यपि ठेका मूल्य सीबीसी की शक्तियों के प्रत्यायोजन से अधिक था जिसके लिये बोर्ड का अनुमोदन अपेक्षित था।

³⁸ ठेका संख्या ओआईएल/सीडीजी4167/डीआरएलजी/12

³⁹ ठेका संख्या ओआईएल/सीसीओ/डीआरएलजी/204/2008

⁴⁰ संख्या ओआईएल/सीसीओ/डीआरएलजी/165/2007